



सार्वजनिक स्वास्थ्य में सामाजिक संचार की भूमिका: कोविड-19 के संदर्भ में लाभ एवं चुनौतियाँ

अजय कुमार निराला

समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानवशास्त्र विभाग, अनुग्रह नारायण सिंह सामाजिक अध्ययन संस्थान, पटना, बिहार, भारत

सारांश

वर्तमान समय में संचार माध्यम लोगों के जीवन का एक अनिवार्य तत्व बन गया है। विश्व के अधिकांश लोगों के साथ-साथ भारत में भी। सामाजिक संचार माध्यम ने न केवल शहरी क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया है, बल्कि ग्रामीणों समुदायों तक पहुंच गया है। सामाजिक संचार माध्यम के कई मंच हैं जैसे कि फेसबुक, वाट्सएप, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, ट्विटर आदि। सामाजिक संचार भी स्वास्थ्य संबंधी विकास एवं परिवर्तन में मुख्य भूमिका निभाता है। महामारी की अवधि में संचार माध्यम आहार योजना, क्या खाना चाहिए, क्या नहीं, भोजन में किस प्रकार की सामग्री और स्वस्थ जीवन कैसे व्यतीत करें। हाल ही में कितने ही दवा कम्पनियों ने सामाजिक संचार माध्यम के जरिए अपना कारोबार शुरू किया है। वे अपनी दवाओं का प्रचार करते हैं, और सामाजिक संचार माध्यम के मंच पर डॉक्टर भी उपलब्ध हैं। इसलिए, इस स्थिति में सामाजिक संचार ने केवल लोगों को जोड़ने के लिए बल्कि व्यापार को बढ़ाने, स्वास्थ्य देखभाल की सलाह और जानकारी के लिए भी सफल है। हम किसी भी सामाजिक संचार मंच पर मौजूद लोगों तक रोकथाम की जानकारी फैलाने में सामाजिक संचार द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। सामाजिक संचार अफवाहें फैलाने में एक भूमिका निभाता है, जिससे देश की आबादी में मानसिक संकट पैदा होता है। इस संदर्भ में, यह लेख-पत्र सार्वजनिक स्वास्थ्य में सामाजिक संचार की भूमिका का पता लगाएगा। यह लेख-पत्र यह बताएगा कि जनता को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने में सामाजिक संचार की क्या भूमिका है और सामाजिक संचार के कारण राज्य के लिए क्या चुनौतियाँ हैं।

मूल शब्द: सामाजिक संचार, सार्वजनिक स्वास्थ्य, कोविड-19, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, लाभ, चुनौतियाँ

प्रस्तावना

सामाजिक संचार अब लोगों के दैनिक जीवन की जानकारी के लिए आवश्यक उपकरण है। सामाजिक संचार मंच के विभिन्न स्रोत हैं, जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, लिंकडइन, यूट्यूब, ट्विटर आदि। ये एप्लिकेशन अपने-अपने उपयोगकर्ताओं को अपनी सामग्री साझा करने और आदान-प्रदान करने की अनुमति देते हैं। इन मंचों का उपयोग विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता है, जैसे कि व्यक्तिगत सामग्री साझा करना, सामाजिक खोजना, बहस करना, अनुसंधान नेटवर्क का विश्लेषण करना, सेवा प्रदान करना और समर्थन प्राप्त करना।

कोविड-19 के प्रकोप के समकालीन युग में, विश्व स्तर पर फैली बीमारियाँ और गलत सूचना का प्रसार सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर समस्या है। गलत सामाजिक संचार या गलत सूचना के वितरण से हस्तांतरण स्वरूप में बदलाव आ सकता है। इसके अलावा, कुछ अध्ययनों में शारीरिक और मानसिक स्थिरता पर सामाजिक संचार के प्रभाव का परिणाम पाया गया। सामाजिक संचार को लोगों के दिमाग को कब्जा करने के लिए एक मंच के रूप में उपयोग करके बाजार में अवैध दवा को बढ़ावा दिया जा रहा है। दूसरी ओर, आशावादी दृष्टिकोण से, यह देखा गया है कि प्रौद्योगिकी कुछ लोगों को सामाजिक संचार से लाभ प्राप्त करने का एक तरीका प्रदान करती है। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य निगरानी का एक नया तरीका प्रदान करता है और उसी से संबंधित जानकारी एकत्र करता है। साथ ही, कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि कई स्वास्थ्य संरक्षण संगठन स्वास्थ्य देख-रेख को बेहतर और अधिक लागत प्रभावी तरीके से बढ़ाने के लिए सामाजिक संचार का उपयोग कर रहे हैं। हालांकि यह देखा गया है कि सभी हस्तक्षेप उपयोगकर्ताओं के बीच स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता या एकाग्रता बढ़ाने में सफल नहीं होते हैं। आम तौर पर, लोग सामाजिक संचार का उपयोग, स्वास्थ्य देख-रेख गतिविधियों पर सलाह लेने के लिए करते हैं जैसे कि उनकी चिकित्सा समस्याओं का उत्तर ढूँढना, उपयोगकर्ता स्वास्थ्य और शिक्षा से संबंधित जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

30 जनवरी 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक ने चीन से इसके प्रकोप पर अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियमन आपातकालीन समिति के बयान को साक्षा किया और नोवल कोरोना वायरस का नाम दिया। बाद में, 11 मार्च 2020 को कोविड-19 को एक महामारी के रूप में वर्णित किया गया। लॉकडाउन के चरण के दौरान, अमेरिका में, विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा 11 मार्च, 2020 को कोविड-19 संकट को महामारी घोषित करने के कुछ ही घंटों के भीतर, सामाजिक संचार पर कोरोनावायरस से संबंधित शब्दों लगभग 22 मिलियन, उल्लेख थे।

साहित्य समीक्षा

बलराम (2020) के अनुसार, दुनिया भर में सामाजिक संचार और सार्वजनिक स्वास्थ्य और इसके लाभों और कोविड-19 से संबंधित चुनौतियों से निपटने वाला समावेशी साहित्य है, हम सामाजिक संचार और सार्वजनिक स्वास्थ्य और में भारत में कोविड-19 के संदर्भ में इसके लाभों और चुनौतियों के विषय पर ध्यान केंद्रित करते हैं। साहित्य की संक्षिप्त समीक्षा नीचे

दी गई है। भारत में राष्ट्रीय लॉकडाउन की घोषणा से पहले, भारतीयों द्वारा हर महीने 12 जीबी या उससे अधिक डेटा कि खपत की। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में कोविड-19 के आसपास सामाजिक संचार की उपयोगिता जनवरी और मार्च 2020 के बीच दोगुने होते हुए देखा गया है।

काका एवं अन्य (2019) के अनुसार, मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीट्यूट के एक रिपोर्ट के अनुसार भारत डिजिटल उपकरणों के कई आयमों (जैसे सब्सक्राइबर, इंटरनेट, ऐप डाउनलोड करना, आदी) पर शीर्ष दो देशों में एक है। अगर भारत में देखा जाय तो सामाजिक संचार से 296 मिलियन उपयोगकर्ता जुड़े हुए हैं।

इस संदर्भ में, यह लेख-पत्र सामाजिक संचार के उपयोग की व्याख्या कर रहा है और लोगों के जीवन में सामाजिक संचार के परिणामों का पता लगाने की कोशिश कर रहा है, विशेष रूप से कोविड-19 स्वास्थ्य संकट के संदर्भ में। निष्कर्ष बताते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का एक उच्च प्रसार है जो सकारात्मक रूप से कोविड-19 के प्रकोप से जुड़ा है। इन निष्कर्षों में निहित है कि सरकार को कोविड-19 से मुकाबला करते हुए सामान्य आबादी के बीच मानसिक स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। संयोग से चीन सरकार ने हॉटलाइन, ऑनलाइन परामर्श, ऑनलाइन पाठ्यक्रम और आउट पेशेंट परामर्श सहित विभिन्न चैनलों द्वारा मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की हैं, लेकिन अवसाद और चिंता पर अधिक ध्यान देना चाहिए। अगला निहितार्थ झूठी सूचनाओं की निगरानी और फिल्टर करके सटीक सूचनाओं की जानकारी को बढ़ावा देना तथा गलत एवं सही सूचनाओं के मिलावट से बचना होगा।

एम.डी, शोएब और राज के अनुसार, इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि किशोरों और युवा वयस्कों में इंटरनेट की लत का प्रचलन अधिक है और इसके अलावा गंभीर अवसादके साथ इसका संबंध भी पाया गया।

यहां चुनौतियों के अलावा सामाजिक संचार के कुछ फायदे भी हैं, जो इसकी चुनौतियों जितना ही महत्वपूर्ण है। 35 से अधिक आयु वर्ग के व्यक्तियों के बीच सामाजिक संचार की लोकप्रियता बढ़ रही है। कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि सामाजिक संचार का स्वास्थ्य सेवा में भविष्य है, विशेष रूप से रोगियों के जुड़ाव और सशक्तिकरण से संबंधित। हालांकि प्रौद्योगिकी को अपनी क्षमता प्राप्त करने से पहले कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। गरीबों को सहायता प्रदान करने के लिए आजकल डॉक्टर, विशेषज्ञ, चिकित्सक ऑनलाइन उपलब्ध हैं। लॉकडाउन के दौर में लोग सामाजिक संचार पर ज्यादा निर्भर थे। तत्काल और सटीक जानकारी तक पहुंचती है, जैसा कि हम जानते हैं कि सामाजिक संचार की कोई सीमा नहीं है, और कोई भी दुनिया भर में किसी भी पेशेवर तक पहुंच सकता है।

आइसोलेशन एवं एकांतवास के दौरान सामाजिक संचार ही एक मात्र विकल्प है जो मन से भय को कम करने में मदद करता है। इसके अलावा अन्य संचार मंच की तुलना में सामाजिक संचार बहुत अधिक लागत प्रभावी है। सामाजिक संचार का समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन पद्धति

कोविड-19 और वर्तमान स्थिति से संबंधित जानकारी लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कोविड-19 के प्रकोप के साथ, इससे जुड़ी कोई भी जानकारी सामाजिक संचार हैंडल से प्रसारित हो गई, उनमें से कुछ जानकारी सकारात्मक परिणाम दिया और कुछ अफवाहों ने स्थिति को और खराब कर दिया। इस लेख-पत्र का उद्देश्य इस बात पर प्रकाश डालना है कि सामाजिक संचार गलत सूचना फैलाने में कैसे भूमिका निभाता है और व्यवहार तथा मनोवैज्ञानिक स्थिरता के लिए इसे कैसे निपटते हैं।

यह लेख-पत्र वर्तमान समय में सामाजिक संचार के सकारात्मक प्रभाव और लोगों को मनोसामाजिक समर्थन प्रदान करने के लिए सामाजिक संचार हैंडल के तरीकों से भी संबंधित है। सामाजिक संचार की भूमिका और इसके प्रभाव पर साहित्य काफी मिश्रित है, इस प्रकार दोनों पक्षों को दर्शाता है और अकेलेपन, अवसाद और तनाव जैसे खराब स्वास्थ्य परिणामों के बीच संबंध को दर्शाता है।

यह लेख-पत्र तीन राज्यों बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश से ऑनलाइन सर्वेक्षण का परिणाम है। अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों से आंकड़े संग्रह किया गया है। द्वितीयक आंकड़ों के रूप में लेख-पत्र, पुस्तकों, ऑनलाइन पत्रिकाओं, डब्ल्यूएचओ का रिपोर्ट आदि के माध्यम से आंकड़ें एकत्रित किया गया है। स्वास्थ्य और सामाजिक संचार पर लोगों की धारणा को समझने के लिए प्राथमिक आंकड़ों के रूप में गुगल फॉर्म के माध्यम से आंकड़ें एकत्रित किये गये हैं।

इस सर्वेक्षण में तीन राज्यों से 105 उत्तरदाताओं का चयन किया गया जिसमें 58 (55.23 प्रतिशत) पुरुष और 47 (44.77 प्रतिशत) महिलाएं शामिल थीं।

सारणी 1: लॉकडाउन के पहले तथा लॉकडाउन के समय सामाजिक संचार का कितना समय उपयोग किया गया।

समय	प्रतिशत
1 घंटा या कम	24.6
2-3 घंटा	37.0
4-5 घंटा	21.0
5 घंटा से अधिक	9.0
कभी नहीं	8.4
कुल	100

स्रोत: गुगल फॉर्म के माध्यम से सर्वेक्षण

सारणी 2: आयु के आधार पर वितरण

आयु समूह	प्रतिशत
18-23	34.3
24-29	29.5
30-35	24.2
36-41	6.3
41 साल से उपर	5.7
कुल	100

स्रोत: गूगल फॉर्म के माध्यम से सर्वेक्षण

लक्षित आबादी में बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश से प्रत्येक जिले से 35 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया था, जिसमें 34.3 प्रतिशत युवा वयस्क थे जो 18-23 वर्ष से कम उम्र के किशोर और कॉलेज छात्र थे। 24-29 वर्ष आयु वर्ग से युवा 26.5 प्रतिशत, 30-35 वर्ष के वर्ग के लोग 24.2 प्रतिशत, 36-41 वर्ष के लोग 6.3 प्रतिशत तथा 41 साल से उपर वाले लोग 5.7 प्रतिशत थे। जैसा कि हम देखते हैं, लॉकडाउन चरण के दौरान नेटिजन्स (इंटरनेट का अत्यधिक प्रयोग करनेवाला व्यक्ति) कुछ नई सामाजिक संचार साइटों के लिए साइन अप करते हैं, जो पहले से ही उन साइटों का उपयोग करने वालों की तुलना में अपेक्षाकृत कम हैं। हालाँकि, हम इस लॉकडाउन चरणों के दौरान सामाजिक दूरी से निपटने में नेटिजन्स की मदद करने के महत्व को नकार नहीं सकते। पूर्व-महामारी चरण की तुलना में व्यक्ति धीरे-धीरे सोशल नेटवर्किंग साइटों पर अपना समय बढ़ाते हैं। हमारे सर्वेक्षण से प्रतिक्रिया प्राप्त करते हुए, हमारे लक्षित उत्तरदाताओं में से 37 प्रतिशत ने लॉकडाउन चरणों में अपना समय 2 से 3 घंटे तक अवांछित ईमेल देखने में बिताया। और तालिका-1 इस पर काफी सरलता से विस्तार कर रही है। इसके अलावा, सामाजिक संचार के 105 उत्तरदाताओं में से सामान्य दिनचर्या के जीवन में कोई ध्यान भंग करने के सवाल में 53.6 प्रतिशत लोगों ने इनकार किया और समझा कि वे अपने काम, उत्पादकता या सामान्य दिनचर्या के लिए हमेशा की तरह थे। हालाँकि 46.4 प्रतिशत ने कहा कि सामाजिक संचार उनपर प्रभाव डालती है, और उनके लिए अपने दैनिक काम करने लिए व्याकुलता पैदा करती है।

स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक संचार के प्रति लोगों की धारणा

जब जनसंख्या प्रौद्योगिकी से जुड़ती है तब सामाजिक संचार समकालीन काल में लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में देखा जाय तो संचार न केवल लोगों से जुड़ने का एक स्रोत है, बल्कि यह एक व्यावसायिक लेनदेन, जागरूकता के लिए भी आवष्य हो गया है और लोगों को विभिन्न मंचों जैसे कि यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि के माध्यम से सभी प्रकार के सूचनाओं से अपडेट रखता है। अब कई व्यावसायिक संगठनों ने अपने व्यवसाय को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक संचार का सहारा लिया, और इसके साथ कई उद्यमियों और छोटे व्यापारियों के लिए एक समान अवसर है।

इस पृष्ठभूमि में, यह अध्ययन लोगों के दृष्टिकोण से स्वास्थ्य देखभाल जानकारी के सकारात्मक पक्ष को भी देखता है। जैसा कि हमने उपरोक्त खंड में पहले ही चर्चा की है कि, डॉक्टरों और स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों ने विभिन्न सामाजिक संचार मंचों का उपयोग करते हुए लोगों से परामर्श करना और जागरूक करना शुरू कर दिया है। इस अध्ययन में पाया गया कि 54.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का कहना है कि "हां" वे विभिन्न सामाजिक संचार मंचों पर विभिन्न स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों का अनुसरण करते हैं ताकि उन्हें कोरोना प्रकोप के कारण लॉकडाउन अवधि में स्वास्थ्य संबंधी पहलू के बारे में अद्यतन और जागरूक रखा जा सके। साथ ही, इन उत्तरदाताओं ने लॉकडाउन के कारण डॉक्टरों से ऑनलाइन परामर्श करना शुरू कर दिया। अध्ययन में पाया गया कि कुल आबादी के 34.6 प्रतिशत ने अपने इलाज के लिए ऑनलाइन डॉक्टरों से परामर्श करना शुरू कर दिया। अध्ययन लोगों की पसंद को देखते हैं, चाहे वे ऑनलाइन डॉक्टरों या स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर से जुड़ना/परामर्श करना चाहते हों, इसलिए इस अध्ययन में पाया गया कि 59.8 प्रतिशत उत्तरदाता कहते हैं कि "हां", वे स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों का अनुसरण करना चाहते थे।

कोरोना प्रकोप में सामाजिक संचार

जैसा कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि हाल के दिनों में, विशेष रूप से लॉकडाउन की अवधि में सामाजिक संचार के उपयोगता की प्रतिशत में काफी वृद्धि हुई है। इस महामारी के प्रकोप के साथ, विभिन्न मंच कोविड-19 से संबंधित जानकारी प्रदान कर रहे हैं, जैसे इलेक्ट्रॉनिक संचार, समाचार पत्र संचार और सामाजिक संचार मंच। हाल के दिनों में यह भी देखा गया है कि ज्यादातर लोगों को सामाजिक संचार से पहली बार जानकारी मिलती है क्योंकि न्यूज मंच की तुलना में लोग सामाजिक संचार में सक्रिय हैं। इस अध्ययन में पाया गया कि सामाजिक संचार जानकारी का पहला स्रोत है जो कोविड से संबंधित सभी समाचारों से अपडेट प्राप्त करता है।

इसके अलावा, कुल उत्तरदाताओं में से 48.9 प्रतिशत ने कहा कि स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए सामाजिक संचार एक अच्छा मंच है। लेकिन जैसा कि हमने उपरोक्त खंड में देखा है, जब सामाजिक संचार या ऑनलाइन के माध्यम से डॉक्टरों या स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर से परामर्श करने के बारे में सवाल आता है, तो कुल 34.6 प्रतिशत सामाजिक संचार मंच से सेवा लेने के लिए उपयोग करता है। लेकिन लॉकडाउन की घोषणा के बाद यह प्रतिशत बढ़ता ही जा रहा है।

सीमाएं

यह अध्ययन बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में ऑनलाइन किए गए सर्वेक्षण पर आधारित है। हमने उत्तरदाताओं के बहुत छोटे आकार पर ध्यान केंद्रित किया है। महानगरों में प्रतिक्रियाएँ या परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन हो सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. Banerjee D. Covid pandemic, social media and digital distancing. The New Indian Express, 2020. Retrieved from <https://www.newindianexpress.com>
2. Kaka N, Madgavkar A, Kshirsagar A, Gupta R, Manyika J, Bahl K. Digital India: Technology to transform a connected nation. McKinsey Global Institute, 2019. Retrieved from <https://www.mckinsey.com>
3. Balram S. Covid-19 Impact: Social media activity in the country grew 50X in early March, says Nielsen. The Economic Times, 2020. Retrieved from <https://economictimes.indiantimes.com/tech/internet/covid-19-impact-social-media-activity-in-the-country-grew>.
4. Govt. of India. Initiative towards nutrition's retrieved from <https://poshanabhiyaan.ninIndia.org/>
5. Househ M, Borycki E, Kushniruk A. Empowering patients through social media: The benefits and challenges, Health Informatics Journal, 2014;20(1):50-58.